आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2479 • उदयपुर, शनिवार 09 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

संस्थान द्वारा हैदराबाद (तेलगांना) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान, इसके आश्रम व शाखाओं द्वारा कोरोना के प्रकोप के समय से ही जरूरतमंद परिवारों को राशन पहुंचाने का सेवा प्रारंभ की थी। समय की आवश्यकता को देखते हुए यह सेवा अनवरत हो रही है।

26 सितम्बर 2021 को एक राशन वितरण शिविर हैदराबाद (तेलगांना) में श्री श्याममंदिर कांचीपुरम्– हैदराबाद में संपन्न हुआ। इसमें 77 परिवारों को राशन प्रदान किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान इन्द्रकुमार जी अग्रवाल (सचिव–श्याम मंदिर सेवा समिति), अध्यक्ष श्रीमान नरेशकुमार जी डाकोतिया (कोषाध्यक्ष–श्याम मंदिर सेवा समिति), विशिष्ट अतिथि श्रीमान प्रह्मपादराय जी, एवं श्री रामदेव जी अग्रवाल, श्री राजकुमार जी विघ, श्री एस. सुमित्रा जी, श्री पण्डित रामशरण जी, श्री उत्तम जी जैन डामरानी (समाजसेवी) आदि पधारे। शिविर में प्रभारी श्रीमान् महेन्द्रसिंह जी, श्रीमती संध्या रानी, श्री के. अरुण जी ने व्यवथाएं देखी। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

सागर में हुई दिव्यांग सेवा

'दिव्यांग भी दौडेगा – अपनी लाठी छोडेगा ' इस भावना के साथ स्थापित व संचालित नारायण सेवा संस्थान ने अब तक लाखों दिव्यांग भाई– बहनों को कृत्रिम अंग लगाकर उनके जीवन में खुशियों के अध्याय जोड़े है।' संस्थान के मुख्यालय से लगाकर देश के अनेक स्थानों व विदेशों में भी यह सेवा जारी है।

गत 27 सितम्बर 2021 को बुंदलेखण्ड मेडिकल कॉलेज, सागर (म.प्र.) में श्री शैलेन्द्र जी जैन (विधायक – सागर) के सहयोग से कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित हुआ।

इस शिविर में कुल 24 दिव्यांगों का परीक्षण किया गया। उनमें से 17 को कैलिपर्स लगाया व उन्हें अभ्यास भी कराया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्री राजबहादुर सिंह जी (सांसद महोदय,सागर), श्री शैलेन्द्र जी जैन (विधायक महोदय, सागर), अध्यक्ष श्री दीपक जी आर्य (जिला कलक्टर महोदय, सागर) विशिष्ट अतिथि श्री रामप्रकाश जी अहिरवार (आयुक्त महोदय, नगर निगम सागर), डॉ आर.एस. वर्मा, (अधीक्षक महोदय, बुन्देलखण्ड मेडिकल कॉलेज, सागर), श्री अरूण जी सर्राफ (हड्डी रोग विशेषज्ञ) आदि कृपा कर पधारे। शिविर में टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह जी, श्री हरिप्रसाद जी लड्डा शिविर प्रभारी एवं श्री नरेन्द्र सिंह जी झाला ने पूरी टीम ने सहयोग किया।

(खाजूवाला) बीकानेर में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है। ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 26 सितम्बर 2021 को नारायण सेवा संस्थान के खाजूवाला, जिला बीकानेर आश्रम में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता विश्व हिन्दू परिषद् शाखा बीकानेर रही। शिविर में 218 दिव्यांग भाई–बहिनों की ओपीडी हुई, 37 का ऑपरेशन चयन, 20 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 25 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् भोजराज जी लेखाना, अध्यक्ष श्री भागीरथ जी ज्याबी, विशिष्ट अतिथि श्रीचेतराम जी, श्रीरामधन जी विश्नोई, श्रीफूलदास स्वामी जी, श्रीराजाराम जी जाखड (संस्थान संयोजक), श्रीमती मधू जी शर्मा, श्रीराजकुमार जी ढ़ोलिया, श्रीश्यामलाल जी जांगिड, श्री अजय जी कृपा करके पधारे। शिविर में डॉ. एस.एल. गुप्ता जी, मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी) व भंवरसिंह जी ने सेवायें दीं।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल/ कम्प्युटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सोजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भुखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा- कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चो के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करे उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नही है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

दिव्यांगता से मुक्ति

जन्म से विकलांग जितेन्द्र, सिमराव – बिहार, 15 वर्षों से रेंगती जिन्दगी का भार ढो रहा था। गांव के परिचित से संस्थान के बारे में जानकर पिता श्री शिवजी के मन में पुत्र के चलने की उम्मीद जागी।

नारायण सेवा संस्थान में आकर पुत्र की जांच करवायी और जितेन्द्र के पांव का अब सफल ऑपरेशन हुआ।

जितेन्द्र अपनी दिव्यांगता से मुक्ति पाकर प्रसन्न है।■

नाम– रेशमा देवगोंडा पाटील, गांव –कबनूर,जिला–कोल्हापुर (महाराष्ट्र) मैं जन्म से अपंग नहीं हूँ। 11 महीने के बाद बुखार आया था। इंजेक्शन लगाने के बाद मैं अपंग हो गयी। दौड़ना और सीधा मेरे लिए एक ख्वाब था। हमें आपकी संस्थान के बारे में इचलकरंजी के महेश सेवा क्लब के माध्यम से जानकारी प्राप्त हो गयी। महेश सेवा क्लब के माध्यम से हम नारायण सेवा संस्थान में दाखिल हुए। मेरा ऑपरेशन हुआ।

ऑपरेशन के बाद अब मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ।

मेरे लिए दो पैरों पर सीधी तरह खड़े रहना एक ख्वाब था और वो खूबसूरत ख्वाब सिर्फ और सिर्फ आपके संस्थान ने पूरा किया, इसलिए मैं नारायण सेवा संस्थान का आजन्म आभारी रहूंगी।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

दोस्ती ना कर वो अगर मतलब लालच दाम।
दो सत्यवादी जब मिले, दोस्ती उसका नाम।।
ऐसे दोस्तों से मोहब्बत मत राखजो।
घासी थारा गोटिया मण्डी रा बकरा।
खावण में घणा फागण में कररा ।।

काम आवे नहीं कहे कोई काम तो मुझे बुला लेना और एमरजेन्सी में काम आवे तो पता लगा कि फोन ही नहीं उठावे। चिट्टी का जवाब ही नहीं देवे। सुना अनसुना कर देवे। वो कहते हैं न कि जो सो रहा है उसको जगाना सरल है लेकिन जो जागता हुआ सो रहा है उसको जगाना बढ़ा कठिन है, नींद तेज लागे।

घासी थारा गोटिया
यूं कटपीसी कपड़ा।
और टूटिया– फूटिया
रंग उड़िया लागे लफड़ा।।

10 –10 मुकदमा चल रहे हैं वो कि जमानत आप दे दीजिए आप भी जेल में ना बाबू ना। आज से प्रतिज्ञा करें हम संगत अच्छी रखेंगे।

तात् स्वर्ग अपवर्ग सुख
धरि तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि
जो सुख लव सतसंग।।

एक क्षण का सत्संग भी हमारा जीवन अच्छा कर सकता है। आज मैं इसलिए आपके पास हाजिर हुआ हूँ।

भूतकाल के दुखद घटनाओं में बार –बार मन नहीं ले जाना भविष्य की घटना जो घटी नहीं जो प्रोमेजरी नोट है जो चिट्टी लिख दिये लेटर और टिकट भी लगा दिया 1 रुपये का उस जमाने का 10 पैसे का लगता था वो बाद में 20 पैसे हुए अब 1 रुपये 2 बात वो तो प्रोसनली नोट के आजकल तो एडवान्स चेक ले लेते हैं पर वो चेक सिकरने वाला नहीं वो प्रोमेजरी नोट का रेवन्यु टिकट पड़ा रह जायेगा।

सम्पादकीय

जीवन को गुजारना भी संभव है तथा जीना भी। गुजारने का आशय है कि जो चल रहा है वह बस घिसटता रहे, जीवन उदासीनता व शिकायतों से भरा रहे। ऐसी स्थिति में भी झिकझिक करके भी जीवन गुजर जाता है। दूसरी ओर यह भाव रहता है कि मानव जीवन जैसी दुर्लभ योनि प्राप्त हुई है तो इस सलीके से जीयें। अपने लिये जीये, ओरों के लिये जीयें। जीवन दोनों दशाओं में व्यतीत हो जाता है पर गुजारने में मायूसी छाई रहती है, दुःखों का रोना चलता रहता है, असंतुष्टि का राग हर पल अलापा जाता है। जबकि जीने की तमन्ना व्यक्ति की सोच में बदलाव ला देती है। वह जीवन में संतुष्ट तो होता ही पर जीवन को शृंगारित करने के हर अवसर को खोज लेता है। वह अभाव को भी उत्सव में परिवर्तित कर देता है। ऐसी जीवन ही समाज व देश में योगदान करता है।

कुछ काव्यमय

भारी मन से जीना
इसे जीवन कैसे कहें?
वे भूल जाते हैं कि
दुनिया में कैसे रहें?
जीना तो आनन्द का उद्भव
और संतोष की खान है।
ऐसे जीवन के लिए ही
ईश्वर ने रचे इंसान है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

अहंकार त्यागें

एक मूर्तिकार उच्च कोटि की सजीव मूर्ति बनाता था, वह सजीव लगती थी, लेकिन मूर्तिकार को अपनी कला पर घमण्ड हो गया। उसको आभास होने लगा कि उसकी मृत्यु होने वाली है परेशानी में पड़ गया। वह मरना नहीं चाहता था। यमराज को भ्रमित करने के लिए उसने अपने जैसी दस मूर्तियाँ बना डाली, योजना अनुसार बनाई गयी मूर्तियों के बीच में स्वयं जाकर बैठ गया। अब आपको और हमें पता नहीं लग सकता कि वो कौन है? यमदूत जब उसको लेने आये तो एक जैसी ग्यारह आकृतियाँ देकर अचंभित हो गये। उसमें वास्तविक मनुष्य कौन है? नहीं पहचान पाये, और वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाये?

मूर्तिकार के प्राण नहीं ले सके, तो सृष्टि का नियम टूट जायेगा। सृष्टि का नियम पलटने के लिए मूर्तियाँ तोड़ें, तो कला का अपमान होगा, बड़ा जबरदस्त संकट, अचानक यमदूत को मानव स्वभाव के सबसे बड़े दुर्गुण, अहंकार की स्मृति आई, इधर–उधर घूमते हुए कहा– काश! इन मूर्ति को बनाने वाला

मिलता तो मैं कहता कि मूर्तियाँ अतिसुन्दर बनायी, लेकिन इसको बनाने में एक त्रुटि रह गयी है, यह सुनकर मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा, मेरी मूर्तियों में कमी? ये तो संभव ही नहीं, मैंने तो अपना कार्य पूरा समर्पित भाव से किया है। आज तक जीवन में मेरी मूर्तियों में कोई कमी नहीं निकाल पाया। सबने वा–वा किया, अहंकार बोल उठा। वो तुरन्त उन ग्यारह मूर्तियों में से खड़ा हुआ और बोला कैसी त्रुटि? यमदूत ने उसका हाथ पकड़ लिया और बस त्रुटि कर दी, अहंकार की वजह से तुम भूल गये, तुम ये नहीं जानते कि बेजान मूर्तियाँ बोला नहीं करती। हमें ये सीख मिलती है, अहंकार नहीं रखें, अहंकार तो आप जानते ही हैं राजा का न रहा, इस धरती पर जितने भी प्राणी आये है, भले ही वो भूत में आये हो, भले ही प्रसेन्ट में जी रहे हो, भले ही वो भविष्य में आयेंगे, सभी जितने भी प्राणी है किसी का अहंकार नहीं रहा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ अहंकार को अपने हृदय से निकाल फेंके।

– कैलाश 'मानव'

सेतु बनाओ, दीवार नहीं

शास्त्रों में धन की तीन गतियाँ बताई गई हैं–दान, भोग और नाश। धन की सर्वोत्तम गति है दान। उसके पश्चात् उपभोग करना और अगर ये दोनों ही गतियाँ धन को प्राप्त नहीं होतीं तो उस धन को स्वतः ही नष्ट होना पड़ता है। मनुष्य को अपने संसाधनों का उपयोग लोगों के जन कल्याण हेतु करना चाहिए ताकि लोगों के दुःख दूर किए जा सकें। संसाधनों का उपयोग जोड़ने में होना चाहिए न कि तोड़ने में।

एक बार किसी गांव में दो भाई रहते थे। दोनों भाइयों के पास खेत थे, जिनमें दोनों की फसलें लहलहातीं थीं। एक बार किसी बात को लेकर दोनों भाइयों में मतभेद हो गया।

मतभेद लड़ाई में और फिर बंटवारे में बदल गया। दोनों भाइयों के खेत आपस में सटे हुए थे। एक भाई ने अपने खेत के पास गहरा गड्ढा खुदवा दिया ताकि कोई इधर से उधर आ जा न सके। दूसरे भाई के मन में यह बात खटक गई। उसने मन में मन सोचा – इसने गड्ढा खुदवाया है।

मैं दीवार बनवा देता हूँ, ताकि मुझे उसकी और उसे मेरी शक्ल दिखाई ही न पड़े। उसने मिस्त्री को बुलाया और कहा कि मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा हूँ, मैं जब तक वापस आऊँ, तब तक यहाँ दीवार बना देना। ये कहकर वह कुछ दिनों के लिए बाहर चला गया।

कुछ दिनों पश्चात् जब वह लौटा तो उसने देखा कि उसका भाई उसके घर के आगे बैठा रो रहा है। रोते हुए भाई ने

अपने कृत्य के लिए क्षमा माँगी और कहा कि मैं तो गड्ढा खोदकर बांटना चाहता था, लेकिन तुमने तो पुल बनाकर जोड़ने की बात कर दी।

दोनों भाई एक हो गए। लेकिन दूसरे भाई के मन में प्रश्न था कि मैं तो मिस्त्री को दीवार बनाने के लिए बोल कर गया था, उसने पुल कैसे बना दिया। उसने मिस्त्री को बुलाकर इसका कारण पूछा तो मिस्त्री ने बताया कि मुझे दीवार बनाना नहीं आता। मुझे तो केवल पुल ही बनाना आता है। अतः मैंने बना दिया।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें लोगों के मध्य सेतु का कार्य करना चाहिए, जो लोगों को जोड़े, तोड़े नहीं। लोगों के बीच दीवार न बनें, जो बांटने का काम करती है। यदि सेतु नहीं होंगे तो जीवन में बहुत–सी मुश्किलें हल ही नहीं हो पाएँगी। नारायण सेवा संस्थान भी रोगियों और दानदाताओं के मध्य सेतु का ही कार्य कर रहा है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

उदयपुर पहुँचते ही कैलाश अस्पताल में ही उतर गया। पिता उसे देखते ही मुस्कुरा पड़े। उनकी मुस्कान कह रही थी –मैंने कहा था ना। कैलाश भी पिता से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। पिता ने उत्सुकता से शिविर की एक एक बात का बारीकी से विवरण लिया। वे बच्चों को दी गई ड्रेसों के बारे में जानने को ज्यादा उत्सुक थे। उन्होंने पूछा कि –सब बच्चों को ड्रेसें मिल गई या कुछ रह भी गये। कैलाश ने बताया कि कई बच्चे रह गये मगर क्या करते, हमारे पास जितनी ड्रेसें थी, सब बांट दी।

पिता कैलाश की बात गौर से सुन रहे थे, उन्होंने अपने हाथ की सोने की अंगूठी निकाली और उसे देते हुए कहा कि इस अंगूठी को बेच कर जितने पैसे आयें उसकी ड्रेसें खरीद कर बाकी के बच्चों में बांट देना। पिता की भावना देखकर सब द्रवित हो उठे। कैलाश को बरबस ही वर्षों पहले ऐसी ही घटना याद आ गई। तब भी पिता ने असहाय बच्चों की सहायता हेतु इसी तरह अपनी अंगूठी उतार कर दी थी। वहां 75 बच्चे थे मगर वे 57 ड्रेसें ही ले जा पाये थे, इतने ही पैसे थे। पिता की इस पहल पर कैलाश को हिचकिचाहट हो रही थी तो मन ही मन गर्व भी हो रहा था। कि वह ऐसे पिता का पुत्र है। कैलाश ने अंगूठी लौटाते हुए कहा कि – इस बार हम बाकी बच्चों के लिये भी ड्रेसें ले जायेंगे, आप यह अंगूठी अपने पास ही रहने दो। पिता भी तो उसी के थे, वे ऐसे कैसे मान जाते। उन्होंने अंगूठी लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि तू जो पैसे इकट्ठे करे उससे कोई और चीज ले चले जाना। अगले शिविर की तैयारी की चर्चा की तो ग्रामवासियों में व्याप्त चर्म रोग पर सभी चिन्तित थे। कल्पना बोली कि बच्चे बहुत खुजला रहे थे, ऐसा लगता था जैसे वे महीनों से नहीं नहाये हों, अगली बार अपन जायेंगे तो सबको नहलायेंगे। छोटी सी कल्पना का यह सुझाव सभी को पसन्द आया। कैलाश को भी अच्छा लगा। उसने कहा कि अगली बार अपने साथ बाल्टी और साबुन की बट्टियां भी ले जायेंगे। इस पर किसी ने सवाल किया कि खाली स्नान कराने से क्या होगा, यदि हमारे साथ कोई चर्म रोग विशेषज्ञ डॉक्टर चले तो बहुत अच्छा रहेगा। सुझाव तो अच्छा था पर डॉक्टर को देने के पैसे कहां थे।

अंश - 131

दिव्यांग रजत को मातृभूमि में मिली राहत...छलकी मां की आंखें

कनाडा के ओनटेरियो राज्य के मारखन शहर की एक बीमा कम्पनी में कार्यरत मानक पटेल एंव उनकी पत्नी नीता कई जगह इलाज के बाद अपने युवा पुत्र रजत को लेकर नारायण सेवा संस्थान पहुंचे। रजत बचपन से ही ना सिर्फ मानसिक रूप से अक्षम अपितु दोनों पैरों से भी जन्मजात पोलियो ग्रस्त था। संस्थान में आर्थोपेडिक सर्जन द्वारा रजत का सफल ऑपरेशन हुआ।

रजत के माता–पिता ने संस्थान की निःशुल्क सेवा कार्यो व व्यवस्था आदि को विश्व में अनूठा बताते हुए कहा कि हम यहां से एक नया रजत लेकर जा रहे हैं। संस्थापक पूज्यश्री कैलाशजी मानव से भी आशीर्वाद ग्रहण किया।

उदवर्तनम से घटता है वजन

उदवर्तनम पूरे शरीर पर की जाने वाली मसाज है, जिसे हर्बल पाउडर या पेस्ट से करते हैं। हरड़, बिभितक, आंवला, राई, देवदार, कुलथी समेत नाड़ियों को शक्ति देने वाली अन्य जड़ी बूटियों को मिलाकर पाउडर बनाते हैं। वही इन्हें मेडिकेडेट तेल मे मिलाकर पेस्ट बनाते हैं। नेचुरोपैथी विशेषज्ञ के अनुसार उदवर्तनम पाउडर या पेस्ट को पूरे शरीर पर 30–40 मिनट के लिए मलते हैं। पाउडर के सोखने के गुण से यह शरीर में जमा अतिरिक्त वसा को खींचकर वजन घटाता है। मसाज के बाद गुनगुने पानी से नहलाते हैं। मसाज से नसें सक्रिय होती हैं और रक्त संचार बेहतर होता है।

ध्यान रखें : हाई ब्लड प्रेशर, त्वचा संबंधी रोगों व संक्रमण, घाव या कटे/जले होने पर मसाज न करें। पंचकर्म या नेचुरोपैथी विशेषज्ञ की देखरेख में ही इसे करवाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

तूं सूरज है पगले फिर
क्यों अन्धकार से डरता है।
तूं तो अपनी एक किरण से,
जग प्रदीप्त कर सकता है।

अपना भरत बहुत महान है। वेदों का देश, उपनिषदोंका देश, ऋषि– महर्षि, वैज्ञानिक, रिसर्च करने वाले वैज्ञानिक। अभी आईआईटी दिल्ली में एक ऐसी रिसर्च हुई है कि कोरोना की जाँच का कार्य बहुत कम खर्चे में हो जायेगा। इसको पूना की प्रयोगशला ने भी सही माना है।

इसी तरह से चाईना में और यूएसए में इसके वेक्सिन निकाले गये हैं। चाईना ने भी अभी मनुष्यों पर प्रयोग करना चालू कर दिया है। अमरीका ने दस–बार दिन पहले प्रयोग करना प्रारम्भ किया थ। बहुत जल्दी वेक्सिन आऐंगे– अपने पास। डरना नहीं है लाला सावधनियाँ रखनी है।

सोशल डिसटेंस बनाये रखना है। हाथ धोने हैं, कल आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी साहब ने दूरदर्शन पे जनता कर्फ्यू रखा था। आठ बजे आपने थालियाँ बजाई थी।

बहुत अच्छा मन की मुस्कान बनी रहे। हाँ, प्राणयाम बढ़ा दें, ध्यान बढ़ा दें, योग बढ़ा दें। हाँ, मन की शुद्धि, शरीर की शुद्धि, आत्मबल सब बढ़ा दें। धन्यवाद, प्रणाम, मंगलकामना।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 258 (कैलाश 'मानव')

आपश्री की अपनी नारायण सेवा संस्थान ने इलाज ही नहीं .... रोजगार के काबिल बनाया।

सहेंगे तो आगे बढ़ेंगे। ऐसा ही जज्बा लिये गोरखपुर की सरिता कुमारी को नई जिन्दगी को जीने का हौसला मिला, नारायण सेवा से । वे कहती हैं मैं जब चार साल की थी तब मेरे पांव में पोलियो हो गया। मेरे माता – पिता ने काफी इलाज कराया लेकिन ठीक नहीं हुआ है। पहले मैंने कभी सोचा भी नहीं थी कि, मैं अपने पाँव पे खड़ा होकर चल पाऊंगी। लेकिन यहाँ आकर मेरे मन में उम्मीद जगी कि मैं भी अपने पांव पे खड़ी हो के चल सकूंगी। अपने पांव का निःशुल्क ऑपरेशन करवाकर। अब सरिता कुमारी अपनी जिन्दगी का सफर आसानी से तय कर लेती है। संस्थान ने जहां सरिता कुमारी को पैरों पे खड़ा किया। वहीं पे उसे निःशुल्क कम्प्युटर कोर्स की ट्रेनिग देकर उसकी जिन्दगी को जोड़ा रोजगार के सुअवसर से। वो संस्थान के प्रति अपना आभार प्रकट करती हैं। वे कहती रहती है कि नारायण सेवा संस्थान ने मेरा इलाज भी करवाया साथ भी कम्प्युटर कोर्स कराया। मैं आज बहुत खुश हूँ।

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर – 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023